



[illegible]

नवगवसदं दसः यनमगि वस्यं नवके शोणजि द्वाद्या
 वयागय वळ्हा गयसूखी विनंति हूँ नमो ॥ धनद
 यसाधिसीत ॥ ॥ धनमहका न्यासाय ॥ ॐ वक्रा नमः ॥
 गिल्ल ॥ ॐ गायत्री नमः ॥ ध्यातु ॥ ॐ मातृका सनमः ॥
 हृदय ॥ ॐ कौसर्गं धीं दं ॥ हृदयाय नमः ॥ ॐ गुरुय ॥

ॐ वं वं जं जं तं तं वी नि व स स्वा दा ॥ ग कु न्या य ॥ ॐ उ टं उं
रं रं उं नि खा व घ ट ॥ म ध मा ना य ॥ ॐ न र्थि दं धं नं न क व
वा य दू ॥ जू ना मि का ॥ ॐ उं र्थि रं वं रं मं उं न न ग या य वी व
इ ॥ क नि द्र या ॥ ॐ र्थि रं वं रं मं उं न न ग या य वी व
रु द ॥ क ज त ल वृ द्र या ॥ ॥ र्थि रं वं रं मं उं न न ग या य वी व

म ॥ ॐ वं वं जं जं तं तं वी नि व स स्वा दा ॥ ॐ उं उं उं उं उं उं नि
वा य व घ ट ॥ न र्थि दं धं नं न क व वा य दू ॥ उं र्थि रं वं रं मं उं
न न ग या य वी व इ ॥ र्थि रं वं रं मं उं न न ग या य वी व
रु द ॥ ॥ र्थि रं वं रं मं उं न न ग या य वी व ॥ ॐ र्थि रं वं रं मं उं
उं उं क वृ द्र या ॥ मं रं ना ग या य वी व ॥ ॐ रं ग लु या ॥ वं नं

ॐ ह्रीं ॥ ॐ ह्रीं दद्याद् ॥ ॐ ह्रीं निमसि ॥ ॐ मुख ॥ ॐ ह्रीं खं गं
घं दं दक न दस ॥ ॐ ह्रीं जं गं दं वा दस ॥ ॐ ह्रीं उं रं लं दक या द
नं थं दं धं नं वा म वा द ॥ ॐ ह्रीं या ल्य था ॥ ॐ न ॥ ॐ वृ थू ॥ ॐ ह्रीं न
लं ना रि ॥ ॐ मं उ द ल ॥ ॐ न ॥ ॐ ह्रीं द दि ॥ ॐ द क्रा ल ॥ ॐ व द सि नी
ली नि स्था ॥ ॐ वं वा मा ल ॥ ॐ ख व द सि नी ॥ ॐ ह्रीं द द या दि द क वा द

ॐ ह्रीं द द या दि वा म वा द ॥ ॐ ह्रीं द द या दि द क या द ॥ ॐ ह्रीं द द या दि
वा म या द ॥ ॐ ह्रीं द द या दि ना ली ॥ ॐ मुख ॥ ॐ ह्रीं नि मा नृ का
स ॥ ॥ ॐ न ॥ ॐ ख वृ ज न ॥ ॐ ह्रीं नि म लु ला द ग क ला त्त २ ॥
क र्त्त न व स ॥ ॐ ह्रीं ३ स ल ॥ ॐ ह्रीं था य न ॥ ॐ ह्रीं म लु ला य
दा द स क ला त्त न न म ॥ ॐ ह्रीं ली ली ली ली उ द क न यू यी ॥ ॐ ह्रीं

नीलवज्रमूनयेव (गादावनिमयस्वगि ॥ नमो देसिंधूका
वनि ॥ जलान्निर्गमनिर्धकृत् ॥ चोद ॥ ॥ सीसाममभुला
थथा ॥ कलात्मननम ॥ नैकीपी श्रीववृषादवी श्री ॥
नवाकलयुथ ॥ ॥ नमदाथानिमदा ॥ चंदनकगयुथ ॥
वायनदोय ॥ गायत्री ॥ खुं सिद्धिलक्ष्मीविद्मह नवया

धिकधीमही ॥ गन्नालक्ष्मीयथादया ॥ ॥ न्यास ॥ उं जीर्ण
जीर्णुष्टास्थानिम ॥ द्वांतीर्णतकु न्यास्थानिम ॥ द्वां मर्ममध्वमा
स्थानिम ॥ द्वां नीर्णजूनानिकास्थानिम ॥ रुं कीर्णकनिष्टा
स्थानिम ॥ द्वां कीर्णकजगलपृष्टास्थानिम ॥ द्वां वाममनिर्व
धस्थानिम ॥ नमश्चक्रितमनिवधस्था वीषद ॥ उं द्वां द्वां

ॐ श्रीकोनमः॥ कलयुष्ट॥ कलन्यासः॥ ॐ बुद्धवः॥
 श्रीवकुमरु॥ इन्द्रककुल॥ श्रीवामकः॥ ॐ शिवाय नमः॥
 श्रीहृदय॥ श्रीनाथ॥ नृलिंगमस्तु॥ मंगुष्टमस्तु॥
 वृत्तिनवाकलिन्यासः॥ ॥ श्रीनाथाय नमः॥ ॐ श्री
 श्रीसर्वमन्त्रसनाथनमः॥ नृलिंगमस्तु॥ कलन्यासः॥

क० ज० श्राय रुद्र ॥ सती ॥ वासुदेव काल प्रीति ॥ धृति श्रुं ॥
 सु० यन ॥ श्रुं ॥ कर्तन ॥ ह्रीं सूर्यमणुलाय द्वादश कलात्मने
 कुरु मानिय ॥ श्रीं श्रीं ॥ ज्ञानरत्न वायवीय ॥ मूलमनुनन्द ॥
 दीर्घवक्त्राणु ॥ श्रीं श्रीं ॥ स्वर्णमण्डप मसखममावर्त ॥ आयुर्वित
 मद्रावाण मणि ॥ धनसमावर्त ॥ श्रुंदव्ययुतय ॥ ज० मृ० नि० म०

नवाली ॥ ~~सू १५ क २४ य १०~~ ॥ ~~सू १५ क २४ य १०~~ ॥ ~~सू १५ क २४ य १०~~ ॥
सांसा मम लुलाय वा उम कला न्मनंणी या एय तम ॥ ॥ मम मूडा
नक ययाव ॥ स काल याय ॥ वन्दना कृत यथै तम ॥ ~~६५~~ तूथान
मूडा दण्डिय ॥ गल वहु क कण या व वृद्धा न्यादि मूत्र सत तथै न
जन्म वन्दनं तम ॥ नि वन्दन ॥ डी जू कृत ॥ श्री सिं धू व ॥ उं य वी ॥
नी गय क य त य ग यो यामि ॥ दी वृद्ध क ॥ का कृ त य नाय ॥ जी वृद्धा याति
की ना द श्वे नी ॥ च को मा ॥ ॥ ~~६५~~ ॥ तं वा नी दी ॥ ~~६५~~ ॥ ~~६५~~ ॥

य चाम लु ॥ ~~६५~~ मला लु ॥
धन धन यो जू सन यूजा ॥ ~~६५~~ जग्नि म लु लाय तम ॥ दी सूर्य म
लु लाय तम ॥ सी सा म म लु लाय तम ॥ ~~६५~~ काम वृद्ध यि भ यन तम ॥
डी य वृ गी लियी भ यन तम ॥ श्री जाल भ यथी भ यन तम ॥ ~~६५~~ डी ली उ
यान यी भ यन तम ॥ ~~६५~~ यथा म नाय तम ॥ ~~६५~~ विवृ यत स नाथ तम ॥
वृद्ध यता स नाय तम ॥ ~~६५~~ यथा स नाय तम ॥ ~~६५~~ सदा नि वृ यता

सनायनम ॥ ॥ धनं गवाहन ॥ त्रिंशो यासायवयवादीय
वजिखलवयिली ॥ सर्वमृतदिकमार्त ॥ अदियदियममगुनी ॥
मदावूडासनादवी ॥ विद्वन्मृगतिनिमूल ॥ सर्वमृतदिकमार्त ॥
अदियममगुनी ॥ अस्मिन्मृगलसान्निध्यसुयसदाव ॥ ॥
धनधान ॥ कथं नृणां स्ववर्णुनी ॥ वृद्धस्यायविसस्मिन् ॥ यश्चैव

कागुलखम ॥ मूडाकृणविध्वानि ॥ वनारुयधर्जायाण ॥
वृष्टाकयावध्वानि ॥ स्वद्वामध्वानिदीदवी ॥ चिन्तयकृकवस
ली ॥ मदावूडासनी ॥ वृद्धतिह ॥ नयानिमूडाकृत ॥ यावयति
ह ॥ सुधयना ॥ सन्निधान ॥ डी सनिली ॥ धनं तथ्येन मूव
याल ॥ ॥ धनसनान ॥ अलि ॥ मृगाणकिणिवा मांसं तस

मिल्यावनूकर्म ॥ विद्वि सिद्धि वनयूध ॥ ब्रुलिमाना ददाय
 दं ॥ जोणीरुगवस्थी अत्रिसनातनम ॥ गंगधुजमून जल
 जोणीरुगवस्थी जलसनातनम ॥ वन्द्य ॥ सिद्धूने ॥ यैय
 लाखणु ककमैयूक ॥ कयूजमृगमारिज ॥ विलयनार्थदव
 णि गृहावातु मनुलयन ॥ ॥ सिद्धूने ॥ वीरश्वरी महावीर

[illegible]

वीणी वधु मुखीणी ॥ खुं हूँ लीयावकीणी ॥ खुं थै १ यमघं ० ॥
खुं सीणी निवदनीणी ॥ खुं क्र ० रंणी कर्यकनी जंवाणी याइका
बटकी ॥ गुं अकिनी जम्वाणीया ॥ गुं वाकिणी जंवाया ॥
गुं लाकिनि थू जम्वा ॥ गुं काकिणी थू जम्वा ॥ गुं साकि
थू नोजंवा ॥ गुं हाकि थू ली जम्वा याइका ॥ थू लिवा ॥

वाम ॥ लीं डीं दू नं वज वैयावनी थू दू दू रुट स्वाहा ॥ उं लीं व
गला मुखिस वं इ द्वा नमि र्ख वाच र्म रु थ जि द्वा की वय २ वृद्धि
लाणी यद्वा उं स्वाहा ॥ उं डीं ना यद्वा थू उं ग व धु न ल म द्वा नि
दू दू सदा न क न क वा मां ह स मृ ग द र्म न म स्वाहा ॥ ॥ व
व कू वृज ॥ डीं मदा वधु न क र्म क र्म नि कालि म नू न रुणी ॥

रं अंकारं मदासिद्धिं समयश्चुं न विधा न लक्ष्मी वनयद
स्यादा ॥ अदिं कं मदासुष्टि वधु लक्ष्मी सिद्धिं श्री वीरु रुद्र ॥
कौपीं कं रुद्र रुद्र रुद्र स्यादा ॥ शुभ नमो भगवति सिद्ध लक्ष्मी
श्री वीरु रुद्र रुद्र स्यादा ॥ ॥ मून न वा कल न दूज ॥ ३ ॥ गायत्री ॥
भक्त ३ ॥ वधुना कृत वर्यं नमः ॥ आनि मुद्रा दर्शय ७ ॥ धूम

वनश्रय श्रवसाश्रुतं गन्वाद्युर्गंधमूर्ध्नि ॥ आद्याय सर्वदेवानां
धूयायैयनिगृह्णतां ॥ ॥ वीर ॥ सुयका ॥ मदातज ॥ सुवर्ण
मिवायदं ॥ सवाद्यायैयनिगृह्णतां ॥ दीयायैयनिगृह्णतां ॥ न
वदसाधन ॥ यागजल नदाय दूं रुद्र ॥ या ४ नो ४ ता ४ वा ४
अन्नं वधु विधिं वधु नमः ॥ बहिरु समीपि ॥ मया निवदितां दु

स्यं गृह्य गायत्रमभ्युपवी ॥ आचमनीयसाध ॥ ॥ धनवलि ॥
कीर्णसर्वमन्त्रासनायनमः ॥ कीर्णवृत्तकलयुगवदकनाथ
ममसर्वविघ्नान्नाशयकलमनाथा ॥ श्री साधय १०० मासि
यवानवलिगृह्य १०० १०० इत्यादि ॥ ॥ कीर्णगुणकमगधय
तिनाथसुवर्णसदिगसर्वजनमवसमान ॥ य १०० १००

स्वादा ॥ नंदीर्णगुणकसुस्मानकगयातमदासेनवममसर्व
विघ्नान्नाशयस ॥ श्री साधयवानवलिगृह्य १०० १०० इत्यादि ॥ ३ मा
स १०० सर्वआथागिनीथावलिगृह्य १०० इत्यादि ॥ ३ मा सिद्धि ॥
जोमधुवलिगृह्य १०० १०० इत्यादि ॥ ३ दण्डकादि १०० १०० कल
यालायजुगिनामादिजुसु १०० वद्वान्यादिजुसु मागु

काशदिनाय मम सर्वविघ्नानाय सकलमनीषासाधय
ॐ मङ्गलितयत्नलतादतयूजवर्तिगृह्ण १ दुर्दुष्टादा ॥ ज
था ॥ किजयसमत्यजामि ॥ जयमूलमकन ॥ १०८ ॥ उदंती
गुप्तागिगुक्तागोकीर्यगृहाणात्मिकतजय ॥ सिद्धिरुदेदुमय
न वयसाधावयिस्मिर्ग ॥ ॥ ॥ मयिदुद ॥ जयमूलसयजाय

मिजयिजनसूक्तदुष्टासिद्धलक्ष्मीदवगासवीथिसिद्धयजय
दिनिआग ॥ ॥ ॥ मय ॥ जयवृमलुताकाल ॥ धानीवीदीसगुक्ता
द्यतइमिगदजावयूवीकालवक्ता माददिवचि कार्याविविध
गुणशगावकनाथवलक्ष्मी ॥ मृगविघ्नाथवितियतिवद
कीथागिनीकृपयात्ता एकासातकपूयाविविधगणयनायाहु

मविचदको ॥ निवसतिक नवीयः सद्देया ग्म ग्म नः विततजन
दिनायाथग नूजाति नूरु ॥ हिमकवदिम ग्म ग्म यथैव काम मा
या दिनी गुदग नूजायासा शिर्य सिद्ध लक्ष्मी ॥ रु क य ल य वि
अयनाधमदसाधिः कियत दत्त निर्णमया ॥ दासा दमिति मांम
वाः कमस्त्रयवमश्चवि ॥ धतयूद्यो जंलि मूलमनुन ॥ ॥ धत

१ यत्रमष्टिगुनू ॥

नय्यो ॥ यनू ॥ स्वगुनूतय्येनु ॥ यलमगुनूतय्येनु ॥ यत्रमात्रय
गुनू ॥ आदिगिदिगुनूतय्येनु ॥ दवगय्येनु ॥ यीतश्यनासनमू
मदमूदिगममहाशैववा मनुमूक्षी वगुिदगुसनाथा गलगुनूवद
कालोदयाला रुषीया यक्रा यक्रा यिग्वी यितृगवसक
ला मोतवा ॥ अगयाला आगिन्याया गयूका जलवनसदिना या

नमस्तस्मिन् ॥ विदुदवता ॥ सर्वत्र दत्ता ॥ विनायका ॥ या
गिनीकण्ठालांशु ॥ ममद्वयवस्मिता ॥ ॥ धर्मकायमन्त्र ॥
जुंदापीकुंझी ॥ ॥ गिरितावद्वय ॥ जीजावमनियस्याता ॥
थनयाव पट्टिहालिकाय ॥ ॥ जेन ॥ ॥ उक्तयगिरिखम
जाता ॥ यवगवासिनी ॥ यद्यथा निसमूर्तुरुत्तमकुद
१ सदात्ममुद्रावलिधय

विममगृह ॥ धनन्यास ॥ ॥ गिरिधय ॥ ननुकर्मधेवा ॥
वननिमित्तिर्हस्तस्थिणी ॥ मृत्थायैर्गर्धनम ॥ धनमूर्तु विपूजा
जीजासिद्धिलक्ष्मीवटिकायैर्गर्धनमस्याता ॥ ॥ गुरुममूर्तु

खुं सकल गुरु यमधनी प्रसा यरुद ॥ ५ ॥ श्रीगुरु श्या ॥ तं
ऊं ग्या श्या ॥ मं नधमा ग्या ॥ नं फनामिका श्या नम ॥ कं कति
श्या तम ॥ कलीया स ॥ खुं वलमही निती हदया यतम ॥ खुं ति
वानिमाने दवी नि नम श्या ॥ खुं विषमा यय वय समती निवा य
वा यद ॥ खुं सकल इजिता विह कण दली कव वा यद ॥ खुं सव
यादी नु धित ने वी न्य ग्या य वयद ॥ खुं सकल गुरु यमधनी
५ ॥ म सुथ रू द ॥ ॥





१९. लिखित गद्यमी. मेरिका देती पता लिखे

ASHA ARCHIVES

3211

श्री प्रणमः ॥ य नमः ॥ नमः शिवाय ॥ नमः श्री या शिव
यत्र विनामसि मदा मनुस्य निग्रहा नूयदकला
वक्रा मवि का म धू वा दयगा नम यति कुन्द ४
जिद्यु वर द न्य त्र विही पारिर्वे नम विनामसि
दयता ॥ शुद्धी वी ऊ ऊ ग कि नम की प्रक

ममा रावृ सिद्धार्थ इय विनीया नः ॥ इन्द्रो दी
सर्व स्त्राय मिवाय मृदु पृष्टा शीतमः ॥ इम सर्व रूफ
मिवाय त इति ३ ३ नि यत्र फ मिवाय मव मा इ
न ३ न सर्व स्त्राय मिवाय मना मका ३ ३ नि न्या न न
य ल कृ य मिवाय केति य ३ ॥ ३ न न के न क
य मिवाय कत तन पृष्ट ३ ३ न न के न क

कवृत्र नीत्र ॥ त्यादि ॥ व न दे म द गी मृत्र सिद्धि मय विन
क र्पे दू मे पृ जित पाद पृ क र विहा य द र वृ क र
न्य व न्दि नं पृ य न द म व र प म न्ना यी या ग
माया दू द य न पृ मा न वि दू ती र्पे ल व र
निष्ठा न वि दू नार्थ क र क म न व पृ म य
द्विवा लि गित दी वृ द दी ॥ ॥ न पृ म य म मि न दी

श्री वृ मूलो मूर्धिका मरु न्य ऊष्म कृ पयोगी विष्णो ग
पृ ऊ ~~मूर्धिका~~ मूर्धिका इति सः रु राय नमः मूर्धिका गुरु
न ॥ मरु न्य राय नः संधितः मरु न्य नमः पति व
प न मूलो ज्ञाने नमः ॥ नित्य कृत्त प न्य नमः
व्य न ॥ मरु द वाय नमः विसे कृत्त ॥ मरु द वाय नमः
॥ मरु द वाय पृ व च पाति ज्ञाने नमः मरु द वाय नमः

म र्मु न्य मरु द वाय नमः मरु द वाय नमः मरु द वाय नमः
कृत्त इति मरु द वाय नमः ॥ मरु द वाय नमः मरु द वाय नमः
मरु द वाय नमः मरु द वाय नमः मरु द वाय नमः
॥ नित्य कृत्त प न्य नमः ॥ नित्य कृत्त प न्य नमः
वै न्य नमः ॥ नित्य कृत्त प न्य नमः ॥ नित्य कृत्त प न्य नमः
न ॥ नित्य कृत्त प न्य नमः ॥ नित्य कृत्त प न्य नमः























१ अथ गिवयुजा यधनि ४ वृताद्यो जथा विविधि गिवसमाया थाययद
कमोसर्न नयेयचचनादिश्य युज ययचदवना ४ कजथा यतमु
वन गीगच्यसायनम ४ गीगिवायनम ४ गीगिवायनम ४
उ विष्णुवनम ४ कीकी गि कीनम ४ गीगिवायनम ४ गीगिवायनम ४
ककु निर्यानम ४ गिमधुमाया नम ४ गीगिवायनम ४ गीगिवायनम ४
गीक निष्काया नम ४ गीगिवायनम ४ गीगिवायनम ४ गीगिवायनम ४
तिकनार्गविन्दस्य यदग्न्यास्य ऊथा

२० द्वादयायनम ४ कीगि वसखादा सो गिवायवसत् स ४
कवेचायदं ४ ॥ अथ ग्यायवोसत दं सखादा अतु
यायखादा ॥ १०० ति विच्यस्य कवतययवोद त मादाय गि व
याय ऊथा ॥ आथ निर्यामहर्ग वड गि विनिर्ग वात्र यदा वन
गी वदा कल्या कुली गं यव ४ सुग ववाणी ति हर्ग यव सनै व
आ गि न संसका न सुत मम न गली आथ की कि व सानै विग्वा

श्रीविष्णुत्रयं निस्त्रिंशत्पदं यन्त्रवर्कं विनत ॥ ॐ ति ध्या
॥ ह्यारुगनमेहसं ॐ हा ग कू २ ॐ द गि कू २ ॐ ह स त्रि ध
हि २ ॐ ह स त्रि ३ ॐ ह स २ म स वृडा गृ हान ॐ वा वा अ जि
वं न्या स कू हा उ था श्री कौ कौ शू न पा ॥ ॐ जी व ॐ ह मि
न ३ शू न पा ॥ ४ स प द्दि या सि वां मन च दू ॥ ॐ य वा स वा सा
ॐ हा ग य मूर वं चि रं ति कू ३ ह्यारु ॐ ति जि वं न्या स कू

था या वा दि ॥ नि द द्या त ॐ दं वा द्या मूरं मि वा य न म ४
मूरं ॐ दं श्रु च्छा मि वा य न म ४ मूरं ॐ दं श्रु च्छा मि वा य
न म ४ मूरं ॐ दं स्ना नी य मि वा य न म ४ मूरं ॐ दं च द्ध नं मि वा
य न म ४ मूरं ॐ दं यू ष्य मि वा य न म ४ मूरं य स ध्रु य मि वा
य न म ४ मूरं य स ध्रु य मि वा य न म ४ मूरं ॐ दं न्ये वे द मि वा
य न म ४ मूरं य न वा च मा नी य मि वा य न म ४ मूरं ता वू रं न म ४

शक्तिहिने मरुस्य व, जतुष्टिने मयादव यानि वृत्तेन दसुभ
मरु २ यवैथानस्य स्मृतेन यवमस्य व, यववृत्तदयदवा दिस
ति यवमयदी॥

ASHA ARCHIVES

3211